विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 42 : नई दिल्ली : 8-14 जनवरी 2021

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए छत्तीसगढ़ में पधार गए हैं। वर्तमान में आचार्यप्रवर सहित छत्तीस संत और बारह साध्वियां गुरुकुलवास में हैं। कुछ साधु-साध्वियां पृथक्-पृथक् प्रयोजन से पूज्यप्रवर की अनुज्ञापूर्वक अन्यत्र विहाररत/प्रवासित हैं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि ५७ साध्वियां अन्य मार्ग से रायपुर की ओर आगे बढ रही हैं। आचार्यप्रवर जिस पथ से यात्रायित हैं, वह भारत के सबसे ज्यादा नक्सल प्रभावित क्षेत्र के रूप में है। बस्तर क्षेत्र में स्थित सुकमा, दंतेवाड़ा आदि जिलों की भयावह घटनाएं यदा-कदा मीडिया में जानने को मिलती हैं। इन दिनों चारित्रात्माओं और अहिंसा यात्रा के अन्य संभागीजन उनमें कई घटना स्थलों को साक्षात देख रहे हैं। इस क्षेत्र में सड़क के आसपास जगह-जगह सीआरपीएफ के कैम्प लगे हुए हैं। ये कैम्प और इनमें रहने वाले जवानों के हाथों में रहने वाले आधुनिक हथियार इस क्षेत्र की संवेदनशीलता को दर्शाते हैं। भयानक वन के बीच इस पथ पर जहां जैन साधु-साध्वियों का आना बहुत कम अथवा नहीं होता है, वहां इतने बड़े कारवां का कुशल नेतृत्व करते हुए आना आचार्यप्रवर के अदम्य साहस और आत्मबल का परिचायक है। आचार्यप्रवर आगामी १४ फरवरी को रायपुर में मर्यादा महोत्सव आयोजन स्थल पर मंगल प्रवेश करेंगे, ऐसा पूर्व निर्धारित है। वहां १६-१९ फरवरी को मर्यादा महोत्सव समायोज्य है।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण रायपुर की ओर

२५ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः तल्लाडा से एनकोर की ओर प्रस्थित हुए। गतरात्रिक प्रवास स्थल बालभारती के ऑनर श्री के.प्रवीण अपनी मां के साथ पूज्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए और श्रीचरणों में अपने कृतज्ञभाव अर्पित किए। उन्होंने आचार्यप्रवर के प्रवास के संदर्भ में अपेक्षित व्यवस्थाओं में सोल्लास अपना योगदान दिया और गत कल अपने संस्थान में पूज्यप्रवर के प्रवास से वे अतिशय आह्लादित थे। एक परिवार आचार्यप्रवर को उपहृत करने की भावना से कुछ फल लेकर आया। उसे साधुचर्या की अवगति दी गई तो उसने अपनी भावना का संवरण किया। आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाया। तल्लाड़ा के अन्य कई ग्रामीण भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। कलड़ा गांव का एक व्यक्ति आचार्यप्रवर के दर्शन करवाने के लिए अपने बच्चों को अपने साथ लेकर आया। पूज्यप्रवर ने उन्हें भी मंगल आशीष प्रदान की। मार्ग के समीपस्थ मिल्स और फेक्ट्री के श्रमिकों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला।

दार्यी ओर से आतप बरसा रहा सूर्य अहिंसा यात्रा की उत्तर दिशा में गति को दर्शा रहा था। विहार पथ के आसपास यत्र-तत्र गन्ना, दाल, मिर्ची, कपास और तुअर की खेती दिखाई दे रही थी। विहारपथ के समीप एक सरोवर में खिले हुए कमल के फूल राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। एनकोर गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। एक परिवार ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी पीड़ा प्रस्तुत की तो आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाया। इसी प्रकार एक ग्रामीण बालक को अपने जन्मदिन पर पूज्यप्रवर से मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर करीब १३.७ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर एनकोर में स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रधानाध्यापिका श्रीमती उषारानी आदि ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

इन दिनों मुख्य प्रवचन कार्यक्रम प्रायः ऑनलाइन रूप में ही आयोजित हो रहा है। गल कल से उसके प्रारंभ का समय करीब ग्यारह बजे से निर्धारित किया गया। आज भी उसी निर्धारणानुसार कार्यक्रम समायोजित हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर अपने मंगल प्रवचन में आत्मविजय के लिए शरीर, वाणी और मन पर विजय पाने की प्रेरणा प्रदान की।

स्थानीय सरपंच श्रीमती सी.एस.रुकमणि, उपसरपंच श्री रमेश आदि अनेक गांव के प्रमुख व्यक्तियों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आज दिन में भारतीय जनता पार्टी के कई कार्यकर्ता आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। वे बोले--'आज भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहरी बाजपेयी का जन्मदिन है। इसलिए हम लोग अन्नदान कार्यक्रम कर रहे हैं। हमें आपके आगमन की जानकारी मिली तो हम लोग आपके दर्शन हेतु चले आए। आपके पदार्पण से हमारा गांव पवित्र हो गया।' पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

इस क्षेत्र में वानर जाति के प्राणी यत्र-तत्र दिख जाते हैं। आज वानरों की एक टोली आचार्यप्रवर के आसपास घूम रही थी, उसमें से एक बन्दर पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष की खिड़की पर आकर बैठ गया और आचार्यप्रवर को निहारने लगा। आचार्यप्रवर भी उसे मुस्कुराते हुए स्नेहिल दृष्टि से देखने लगे। इस प्रकार एक मनोहर दृश्य उपस्थित हो गया।

महाश्रमणमय बने गांव, मोहल्ले और ग्रामीणों के हृदय

२६ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः एनकोर से नरसापुरा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के आसपास जगह-जगह ग्रामीण लोग आचार्यप्रवर के दर्शन हेतु सपरिवार खड़े थे। आचार्यप्रवर उन पर आशीषवृष्टि करते हुए गंतव्य की ओर बढते जा रहे थे। कई ग्रामीण पूज्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में अपनी जिज्ञासाएं भी प्रस्तुत कर रहे थे। साधु-साध्वियों और कार्यकर्ताओं के द्वारा ज्यों-ज्यों उनकी जिज्ञासाएं समाहित हो रही थीं, त्यों-त्यों उनके भीतर पूज्यप्रवर के प्रति श्रद्धाभावना वृद्धिंगत होती जा रही थी। पूर्वांचल और दक्षिणांचल के अन्य क्षेत्रों की भांति अपने-अपने घरों के आगे प्रतिदिन पानी छिडककर रंगोली बनाने की परम्परा इस क्षेत्र में भी है।

विनोबानगर के ग्रामीणों ने समूहबद्ध होकर पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उनका सहज भक्तिपूर्ण व्यवहार इस क्षेत्र के निवासियों के धार्मिक रुझान को दर्शा रहा था। गुडियापेडु गांव में एलाद्रि नामक व्यक्ति पूज्यप्रवर को अर्पित करने की भावना से कुछ रुपये लेकर आया। उसे साधुचर्या की अवगति देकर समझाया गया। आचार्यप्रवर ने उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

मार्ग के आसपास कहीं-कहीं हरे-भरे पहाड़ भी नजर आ रहे थे। पहाड़ी भूभाग का प्रभाव सड़क पर भी आरोह, अवरोह और घुमाव के रूप में दिखाई दे रहा था। पहाड़ों की तलहटी में मिर्ची और कपास की खेती प्रचुरता लिए हुए थी। खजूर के पेड़ भी बड़ी संख्या में दिखाई दे रहे थे।

पूज्यप्रवर लगभग १४.५ कि.मी. का विहार कर नरसापुरा स्थित आश्रम पाठशाला में पधारे। आज सायंकाल तक का प्रवास यहीं हुआ। नरसापुरा के सरपंच श्री खतराम मोहनराव, मंडल परिषद रेरिटोयल कंस्टिट्यूएंसि की सदस्या श्रीमती विजय लक्ष्मी और आश्रम पाठशाला के प्रिंसिपल श्री शंकर ने पूज्यप्रवर का आस्थायुक्त स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में अपनी आत्मा को पावन बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

आज प्रायः दिनभर ग्रामीण दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहा। ग्रामीणों के झुण्ड के झुण्ड पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंच रहे थे और आचार्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त कर स्वयं को धन्य बना रहे थे। न केवल नरसापुरा, अपितु आसपास के कुछ गांवों के भी लोग पूज्यसन्निधि में पहुंचकर मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित बन रहे थे।

स्थानीय जिला शिक्षा अधिकारी श्री जहीर अहमद मध्याह्न में आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। वे बोले--'गुरुजी! आपकी यह अहिंसा यात्रा आज के युग में बहुत आवश्यक है। नई पीढी के लिए तो यह वरदान है। आप महान कार्य रहे हैं।'

सायंकाल लगभग ४.१५ बजे आचार्यप्रवर नरसापुरा से कुमुगुडेम की ओर प्रस्थित हुए। इस क्षेत्र में अधिकांश घर सड़क के दोनों ओर बने हुए हैं और उन घरों के पीछे ही खेत दिखाई देते हैं। इससे यह अनायास अनुमानित हो जाता है कि इन ग्रामीणों की आजीविका का प्रमुख साधन खेती है। दोनों ओर खड़े हजारों पेड़ों से घिरा यह पथ ढलते हुए सूरज के कारण और भी रमणीय लग रहा था। आचार्यप्रवर जिस पथ पर गतिमान थे, उस के किनारे लम्बी दूर तक ग्रामीणों के समूह दिखाई दे रहे थे। लोग आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में अपने-अपने घरों के बाहर सपरिवार खड़े थे। कई लोग खेतों में से दौड़कर पूज्यप्रवर के दर्शन हेतु सड़क के समीप पहुंच रहे थे। लोगों की भावभंगिमा पर भक्ति थिरक रही थी। ग्राम्यजन करबद्ध और नतमस्तक होकर पूज्यप्रवर को वंदन कर रहे थे तो आचार्यप्रवर मंद-मंद मुस्कान के साथ उन पर आशीषवृष्टि करते हुए गंतव्य की ओर बढते जा रहे थे।

स्थानीय जनता में अहिंसा यात्रा और चारित्रात्माओं के प्रति जिज्ञासाएं भी थीं, जो साधु-साध्वियों, कार्यकर्ताओं और परिचयात्मक पेम्पलेट आदि के द्वारा समाहित भी हो रही थीं। यह समाधान उन्हें और अधिक भावविभोर बना रहा था। स्थान-स्थान पर अय्यपा स्वामी के उपासक भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित बन रहे थे। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा, किसान मोर्चा आदि के स्थानीय विभिन्न पदाधिकारी, कार्यकर्ता आदि भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे।

पूज्यप्रवर करीब ४.१ कि.मी. का विहार कर कुमुगुडेम में पधारे। स्थानीय सरपंच श्री शांतिलाल, पूर्व मंडल प्रमुख श्री लालू नायक आदि ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर का उल्लासपूर्ण स्वागत किया। श्री लालू नायक परिवार के निवास स्थान पर पूज्यप्रवर का आज का रात्रिप्रवास हुआ। नायक परिवार के सदस्य ऐसे महापुरुष को अपने आंगन में पाकर अत्यन्त आह्लादित थे। उन्होंने आचार्यप्रवर के प्रवास हेतु अपना घर खाली कर दिया और स्वयं अन्यत्र रात्रिशयन किया।

पूज्यप्रवर का प्रवास गांव के बीच बने घर में हो रहा था तो भक्तिभावों से ओतप्रोत ग्रामीणों के आने का सिलसिला और भी बढ गया। लोग पूज्यप्रवर की झलक पाने की ललक लिए आते जा रहे थे और पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद पाकर स्वयं का धन्य बना रहे थे।

करीब तीन कि.मी. दूर स्थित सुजातनगर में लोगों को भी आचार्यप्रवर के आगमन की जानकारी मिली तो वे भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा भी प्रदान की। इस प्रकार भाषायी भेद (तेलगू और हिन्दी) के बावजूद लोग आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आते जा रहे थे और मंगल आशीर्वाद तथा यथावसर पावन प्रेरणा से लाभान्वित बनते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था पूरा गांव और उनके आसपास का क्षेत्र महाश्रमणमय बन गया है।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर का कोत्तागुडेम में भव्य स्वागत

२७ दिसम्बर। प्रातः परमाराध्य आचार्यप्रवर के विहार से पूर्व प्रवास स्थल में ग्रामीण दर्शनार्थियों के आने का तांता पुनः शुरु हो गया। नायक परिवार के सदस्य और उनके संबंधीजन भी पूज्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु पहुंच गए। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। श्री लालू नायक ने श्रीचरणों में अपने कृतज्ञभाव समर्पित किए। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कुमुगुडेम से कोत्तागुडेम की ओर प्रस्थान किया। कुमुगुडेम गांव के लोग अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीष प्राप्त कर रहे थे। कुमुगुडेम के सरपंच श्री शांतिलालजी आदि ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

आज मौसम हल्की ठंड का रूप लिए हुए था। विहार के दौरान वातावरण में कोहरा भी छा गया। वह इतना सघन था कि पचास मीटर के बाद के दृश्य को भी देखना संभव नहीं हो रहा था। सूर्य ने क्रमशः ऊर्ध्वारोहण करते हुए कुछ तेजस्वी रूप धारण किया तो कोहरा भी छिन्न-भिन्न हो गया। नायाकुलागुडम के ग्रामीणों को बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला। मार्गवर्ती गांवों में घरों की बालकनी, खिड़कियों आदि पर लगी हुई लोहे की जालियां इस क्षेत्र में बन्दरों के उत्पात को अनुमानित करा रही थीं। यत्र-तत्र वानरों की टोलियां भी अपने स्वाभावानुसार कूद-फांद करते हुए दिख रही थीं। अय्यपा स्वामी के उपासकों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। तदुपरान्त वे जैन ध्वज थामकर पूज्यप्रवर के आगे-आगे भी चले। ये लोग गत २५ नवम्बर से अय्यपा स्वामी की उपासना में रत हैं। इकचालीस दिनों के साधनाकाल में वे काले वस्त्र पहनते हैं, मांसाहार नहीं करते, चप्पल-जूते आदि नहीं पहनते, ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं और प्रतिदिन मंदिर जाकर अपनी परंपरानुसार पूजा करते हैं। इस प्रकार ये लोग इन दिनों विभिन्न नियमों का पालन करते हैं। इस साधना की पूर्णाहुति वे सबरीमला (केरल) स्थित अय्यपा स्वामी के मंदिर में जाकर करते है। उसकी भी अपनी विधि है, किन्तु बताया गया कि इस बार कोरोना के कारण इन लोगों का सबरीमला जाना संभव नहीं होगा, इसलिए इस क्षेत्र के लोग राजमुन्द्री स्थित मंदिर में जाकर अपनी साधना को पूर्ण करेंगे। इन दिनों आचार्यप्रवर के विहरण क्षेत्र में गांव-गांव में अय्यपा स्वामी के उपासक बड़ी संख्या में मिल जाते हैं। इन लोगों में सहज भक्ति का भाव देखने को मिलता है।

अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ता गत कल कोत्तागुडेम जिला के एसपी श्री सुनील दत्त शर्मा से मिले और उन्हें अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों, आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व आदि के विषय में जानकारी दी। वे उसे सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि मेरे जिले में अहिंसा यात्रा के लिए किसी भी सहयोग की आवश्यकता हो, आप मुझे तुरन्त सूचित करें। मैं उसे करने का प्रयास करूंगा। आज प्रातः उन्होंने अपने अधीनस्थ अधिकारियों से पूज्यप्रवर की सुरक्षा के प्रति विशेष रूप से सजग रहने का निर्देश दिया तथा पूज्यप्रवर के विहार के दौरान वे स्वयं अपने अधीनस्थ अधिकारियों से इस विषय में बार-बार जानकारी भी लेते रहे।

आचार्यप्रवर के अपने शहर में पदार्पण से कोत्तागुडेम जैन समाज के लोग अतिशय आह्लादित थे। उनके उल्लास को देखकर यह कयास लगाना भी कठिन था कि इस शहर में एक भी तेरापंथी परिवार प्रवासित नहीं है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोत्तागुडेम में जैन समाज के बारह परिवार निवासित हैं। इन परिवारों के लोग कई दिनों से पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में सोत्साह तैयारियों में जुटे हुए थे। उनके साथ अग्रवाल, माहेश्वरी आदि जैनेतर समाज के लोग भी सहयोगी के रूप में अपना योगदान दे रहे थे। आचार्यप्रवर की अगवानी में जैन एवं जैनेतर समाज के लोग बड़ी संख्या में उल्लास के साथ उपस्थित थे। जयघोषों के द्वारा उन्होंने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। बड़ी संख्या में जनता की उपस्थिति ने अनायास जुलूस का-सा रूप ले लिया।

मार्ग में स्थानीय विधायक श्री वनमा वेंकटेश्वर राव ने अपने पुत्र वनमा राघवेन्द्र और अपने साथियों के साथ आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया। वे कुछ दूर तक जैन ध्वज थामकर भी चले। इस प्रकार पूज्यप्रवर लगभग १२ कि.मी. का विहार कर कोत्तागुडेम में स्थित सिंगरेनी कोल्लाराडस गर्ल्स हाइ स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। सिंगरेनी ग्रुप के जोइंट सेक्रेट्री श्री एम.राजेन्द्रकुमार, सिंगरेनी कॉलेज के प्रिंसिलप श्री मुरली कृष्णन तथा विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री जी.एस.प्रभाकर आदि ने आचार्यप्रवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में 'योग शब्द' की विवेचना की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'जैन समाज के लोग अपने खान-पान के प्रति भी जागरूक

रहें। ड्रिंकिंग जैसी चीजें उनके प्रयोग में नहीं आनी चाहिए। गुटखा आदि से भी बचकर रहने का प्रयास रहे। अण्डा, मांस, मछली जैसा आहार उनके भोजन का अंग न बने।

जैन समाज के लोगों द्वारा नमस्कार महामंत्र का स्मरण होता रहे। प्रतिदिन कम से कम इक्कीस बार इसका जप हो जाए, ऐसा प्रयास रहना चाहिए। नमस्कार महामंत्र का धारक होना जैनत्व की एक पहचान है। जाति से भले कोई भी हो, नमस्कार महामंत्र का धारक है तो अनुमान लगाया जा सकता है कि वह जैन है। हम अभी दक्षिण भारत में हैं। दक्षिण भारत के कुछ स्थानीय लोगों में भी नमस्कार महामंत्र का प्रभाव देखने का मिला। जैन समाज के लोगों द्वारा नमस्कार महामंत्र स्मरण होता रहे। संवत्सरी के दिन उपवास करने का प्रयत्न करना चाहिए। ये कुछ बातें जैनत्व की पहचान भी है और आत्मकल्याण के उपक्रम भी हैं। जैन समाज के लोग अपने जैनत्व को पुष्ट रखें और कल्याण की बात को अपने जीवन की अंगभूत बनाए रखें। जीवन में संयम की साधना चले, तप चले।'

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर समुपस्थित जनता ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री दिलीप पारख, श्री रमेश रांका तथा सिंगरेनी कोल्लाराइस गर्ल्स हाइ स्कूल के प्रधानाचार्य श्री जी.एफ. प्रभाकर ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी।

सायंकाल करीब ४.३० बजे पूज्यप्रवर सिंगरेनी हाइ स्कूल से कोत्तागुडेम में ही स्थित त्रिवेणी किड्स नामक स्कूल की ओर प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर कोत्तागुडेम शहर के भीतर से गंतव्य की ओर गतिमान थे। मार्ग में भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय जिलाध्यक्ष श्री कोनेरु सत्यनारायण ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वे काफी दूर तक आचार्यप्रवर के आसपास पैदल चले। पूज्यप्रवर का जिस विद्या संस्थान में पदार्पण हो रहा था, उसके ऑनर श्री कोटेश्वर राव आज काफी उत्साहित थे। वे पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आज सुबह भी पहुंचे। सायंकालीन विहार के दौरान उन्होंने अपने घर के समीप आचार्यप्रवर को वंदन किया। पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। बताया गया कि श्री कोटेश्वर राव द्वारा सत्रह विद्या संस्थान संचालित हैं।

पूज्यप्रवर करीब ३.१ कि.मी. का विहार कर कोत्तागुडेम में स्थित त्रिवेणी किड्स नामक स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। श्री कोटेश्वर राव ने अपने विद्या संस्थान में पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। संस्थान की शिक्षिकाएं आदि भी पूज्यप्रवर के स्वागत में सोल्लास उपस्थित थीं।

रात्रि में कोत्तागुडेम जिला के एस.पी. श्री सुनील दत्त शर्मा पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। आचार्यप्रवर तब तक रात्रि विश्राम प्रारंभ कर चुके थे। एस.पी. श्री शर्मा के आगमन की जानकारी मिली तो आचार्यप्रवर पुनः विराजमान हुए। उन्होंने पूज्यप्रवर को विनतभाव से वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी प्रदान की। वे बोले--'हमारे लिए बहुत खुशी की बात है कि हमारे जिले में आपका पदार्पण हुआ। आपके सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेश और आपके चरणों से हमारे क्षेत्र की धरती पावन होती जा रही है। ये तीनों चीजें आज की जरूरत हैं। आचार्यश्री! आप तो हमारा कार्य आधे से आधा कर रहे हैं। अगर आपके इन तीन संदशों को लोग अपने जीवन में उतार लें तो फिर पुलिस की जरूरत ही न रहे।'

उन्होंने वार्तालाप के दौरान बताया कि तेलंगाना में अब एक ही जिला नक्सल प्रभावित रहा है और वह हमारा ही जिला है। कई राज्यों का सीमान्त क्षेत्र और जंगल होने के कारण नक्सली इस क्षेत्र में कुछ सुविधा का अनुभव करते हैं। वैसे सरकार नक्सलियों को आत्मसमर्पण के लिए प्रोत्साहित कर रही है और आत्म समर्पण करने वाले नक्सलियों के उत्थान का कार्य भी सरकार के द्वारा दिया जा रहा है।

कोहरे के बीच गतिमान अध्यात्म जगत का तेजस्वी महासूर्य

२८ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कोत्तागुडेम से पालोंचा की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर के गतरात्रिक प्रवास स्थल के ऑनर श्री वेंकटेश्वर राव ने सपरिवार आचार्यप्रवर के दर्शन कर श्रीचरणों में अपने कृतज्ञभाव अर्पित किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'यहां पढने वाले विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ सत्संस्कारों का भी विकास हो।'

पूज्यप्रवर प्रवास स्थल से कुछ ही दूर आगे बढे थे कि वातावरण में सघन कोहरा छा गया था। कोहरे ने कारण कुछ ही कदमों की दूरी के बाद के दृश्य को देखना संभव नहीं हो पा रहा था। इस कोहरे के साथ वातावरण में हल्की ठंड व्याप्त थी, किन्तु उत्तर भारत की ठंड के सामने यह ठंड नगण्य-सी प्रतीत हो रही थी। कुछ समय पश्चात सूर्य दृश्यमान हुआ और उसके आतप ने कोहरे को छिन्न-भिन्न कर दिया, लेकिन सूर्य का तेज भी ज्यादा समय तक नहीं टिक सका, क्योंकि कोहरा पुनः उस पर हावी हो गया। इस प्रकार मानों अपना-अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए सूर्य और कोहरे के बीच युद्ध काफी समय तक चलता रहा। कभी सूर्य विजयी बन रहा था तो कभी कोहरा अपनी जीत सुनिश्चित कर रहा था।

विहार पथ पर कई ट्रकों में लादकर लकड़ियों के विशाल गट्टर अन्यत्र ले जाए जा रहे थे। पूछने पर जानकारी मिली कि भद्राचलम में प्रतिष्ठित कंपनी 'आई.टी.सी.' की फेक्ट्री है, जिसमें मुख्यतया कागज निर्माण का कार्य होता है। ये लकड़ियां उसी कार्य में प्रयुक्त होती हैं।

पूज्यप्रवर के गतरात्रिक प्रवास स्थल त्रिवेणी किड्स के संस्थापक श्री वेंकटेश्वर राव की धर्मपत्नी श्रीमती पद्मावती मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन के लिए पहुंचीं। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। पालोंचा गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को सविनय वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

पूज्यप्रवर करीब १२ कि.मी. का विहार कर पालोंचा में स्थित टी.एस.डब्लू.आर. स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज (बॉयज्) में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री के.वेंकटेश्वर राव, वाइस प्रिंसिपल श्री पुल्ला रेड्डी आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इच्छा परिमाण की प्रेरणा प्रदान की।

सायंकाल करीब ४.३० बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर पालोंचा से जगन्नाथपुरम की ओर प्रस्थित हुए। स्थानीय ग्रामीणों को बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष पाने का सौभाग्य मिला। आचार्यप्रवर लगभग ३ कि.मी. का विहार कर जगन्नाथपुरम में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज रात्रि का प्रवास यहीं हुआ। जगन्नाथपुरम के सरपंच श्री बालाजी आदि ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया। रात्रि में स्थानीय जनता को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

२९ दिसम्बर। सूर्योदय के आसपास वातावरण में कोहरा व्याप्त था। इस कारण विहार में कुछ विलम्ब हुआ। कोहरे की समाप्ति के उपरान्त परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः जगन्नाथपुरम से बुरगमपडेम की ओर प्रस्थान किया। स्थानीय सरपंच श्री बालाजी आदि ने पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि समर्पित की। वे पूज्यप्रवर को पहुंचाने कुछ दूर तक साथ चले। विहार के दौरान कोहरे ने पुनः वातावरण पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। मार्गवर्ती किनरसानी नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। कोहरा इतना सघन था कि नदी का पानी भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। अंजनापुरम के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर बुरगमपडेम में पधारे। जिला परिषद हाइ स्कूल में आज का प्रवास हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री ताताराव आदि ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

स्थानीय सरपंच श्रीमती कमला आदि ग्राम्यजनों तथा श्रमिक शक्ति युनियन के अध्यक्ष श्री शंकर रेड्डी ने पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में लोभ से होने वाले नुकसानों की चर्चा करते हुए उससे बचने की प्रेरणा प्रदान की।

शासनश्री मुनि पानमलजी का जीवनवृत्त 'श्रम के पुजारी' और शासनश्री कमलश्रीजी का जीवनवृत्त 'राजते कमलश्रिया' जैन विश्व भारती की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'ये दो पुस्तकें लोकार्पित हो रही हैं। शासनश्री मुनिश्री पानमलजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के एक अच्छे मुनिवर थे। मुझे तो बचपन में दीक्षा लेने से पहले ही उनके सम्पर्क में रहने का मौका मिला था। वे अच्छा वात्सल्यभाव रखने वाले संत थे। मुनिश्री बालचंदजी स्वामी (गंगाशहर) उनके अग्रज थे। मुनिश्री पानमलजी स्वामी ने गुरुदेव तुलसी के सरदारशहर चतुर्मास में लम्बी तपस्या की थी। उनका जीवनवृत्त पाठकों को आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला सिद्ध हो, शुभाशंसा।

शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की संसारपक्षीय चचेरी बहन थीं। वे एक भद्र और विदुषी साध्वी थीं, संस्कृत भाषा की ज्ञाता साध्वी थीं। उनका जीवनवृत्त भी पाठकों को अच्छी प्रेरणा देने वाला सिद्ध हो।

जैन विश्व भारती के द्वारा कितनों का जीवनवृत्त सामने लाया जा रहा है। निर्माण करने वाले निर्माण करते हैं, उसके बाद व्यवस्था के बिना सामने कैसे आए। फूलों में सुगंध होती है, साथ में हवा का योग मिलता है तो सुगंध फैल जाती है। जैन विश्व भरती साहित्य की सौरभ को हवा बनकर फैलाने का प्रयास कर रही है। जैन विश्व भारती आध्यात्मिक-धार्मिक दिशाओं में अच्छा कार्य करती रहे।'

पाक्षिक संबोध : वचन रूपी रत्न का सुचिन्तित उपयोग करो

आज पक्खी थी। पाक्षिक प्रतिक्रमण के उपरान्त अर्हत्वन्दना का उपक्रम रहा। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने मुनिवृन्द को पाक्षिक संबोध प्रदान करते हुए कहा--'हमारे जीवन में वाणी का बहुत महत्त्व है। वचन एक शक्ति है, जिसमें ज्ञान भी निहित हो सकता है। वचन से लाभ भी हो सकता है और नुकसान भी हो सकता है। वाणी के संदर्भ में तीन बातें हैं-यथार्थ भाषिता, मधुर भाषिता और मित भाषिता। अयथार्थ वचन से नुकसान हो सकता है। गलती हो जाए और पूछने पर भी उसे अस्वीकार कर दिया जाए तो यह हानिप्रद होता है। कटु बोलना भी हानिकारक हो सकता है।

वचन एक रत्न है। इसका सोच-समझकर उपयोग करना चाहिए। व्याख्यान में इसका उपयोग किया जाना लाभप्रद हो सकता है। किसी का निन्दारूप वचन क्यों बोलना चाहिए। वचन पाप का निमित्त न बने, यह ध्यातव्य है। साधु को चिन्तनपूर्वक बोलना चाहिए। कहा भी गया है-'पहले तोलो, फिर बोलो।' कटु वचन बोलने से वाणी दूषित हो सकती है। आदमी को वाणी के अनावश्यक उपयोग से बचना चाहिए। वाचाल व्यक्ति की प्रतिष्ठा कम हो सकती है। कोई विद्वान भले न हो, किन्तु उसका व्यवहार अच्छा है और सेवाभावना है तो वह औरों के लिए प्रिय हो सकता है। मैंने कई संतों को देखा है कि वे कई वर्षों तक एक ही सिंघाड़े में जमे रहे। (पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश अनेक संतों का उल्लेख किया)

वचन जीवन के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जो व्यक्ति कभी कुछ कहता है, कभी और कुछ कहता है तो उसका विश्वास कैसे हो? दूसरों की निन्दात्मक बातें भी किसी अन्य के सामने व्यर्थ क्यों करनी चाहिए। अपने वचन और व्यववहार को और अधिक अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश परिष्कार की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'जीवन में कभी गलती हो सकती है। स्वभाव गुस्से का हो सकता है, किन्तु उसके परिष्कार का प्रयास करना चाहिए। एक मेंढक दही में गिर

गया। वह उससे बाहर निकलने का प्रयत्न करता रहा। उसकी हलन चलन से दही का मंथन हो गया और मक्खन निकल आया। वह मेंढक उस मक्खन पर चढकर बाहर आ गया। इसी प्रकार आदमी सत्पुरुषार्थ कर गलती रूपी दही से बाहर निकल सकता है।'

गोदावरी नदी के तट पर

३० दिसम्बर। कोहरा आज के विहार में भी विलम्ब कराने वाला सिद्ध हुआ। सूर्योदय के आसपास उसने वातावरण को अपनी आगोश में ले लिया तो पूज्यप्रवर का विहार समय पर नहीं हो सका। कोहरे के छिन्न-भिन्न होने के उपरान्त करीब ७.५५ बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर बुरगमपडेम से भद्राचलम की ओर प्रस्थित हुए। विहार के प्रारंभ में सूर्य और कोहरे में लुकाछिपी का खेल चलता रहा। कभी सूर्य कोहरे को अदृश्य बना रहा था तो कभी कोहरा सूर्य को। कोहरे के बाबजूद इस क्षेत्र में दिसम्बर माह के अंतिम दिनों में भी ठंड उत्तर भारत की अपेक्षा बहुत कम है।

विहार के दौरान रेड्डीपालम के ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष से लाभान्वित हुए। सारपाका के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को हनुमान मंदिर में पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उन्हें मार्ग पर ही मंगलपाठ सुनाया। सारपाका गांव के अन्य लोगों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला।

पूज्यप्रवर गोदावरी नदी पर बने पुल पर पधारे। इस पुल के समीप नया पुल निर्मीयमाण अवस्था में दिखाई दे रहा था। हालांकि पूज्यप्रवर की घोषित दक्षिण भारत की यात्रा की सम्पन्नता में अभी कुछ और दिन शेष हैं, किन्तु भारत की यह सुप्रसिद्ध गोदावरी नदी दक्षिण भारत की सीमा के रूप में देखी जा सकती है। अनेक नदियां इस नदी में सम्मिलित होती हैं।

मार्ग में एक स्थान पर बताया गया कि यहां से कुछ ही दूरी पर 'श्री सीतारामचन्द्रन मंदिर' है। भद्राचलम श्रीराम से जुडा हुआ हिन्दुओं की आस्था का एक केन्द्र माना जाता है। गोदावरी नदी के तट पर स्थित भद्राचलम को 'दक्षिण की अयोध्या' भी कहा जाता है। किंवदंती है कि यह शहर कभी दंडकारण्य का हिस्सा हुआ करता था। यहां श्रीराम ने वनवास के दौरान पर्णकुटी बनाकर लम्बा समय व्यतीत किया था। यहीं पर कुछ ऐसे शिलाखंड भी हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि सीताजी ने वनवास के दौरान यहां वस्त्र सुखाए थे। एक किंवदंती के अनुसार तो रावण द्वारा सीताजी का अपहरण यहीं से हुआ था।

यों तो भद्राचलम में कई मंदिर हैं, किन्तु श्री सीतारामचन्द्रन मंदिर उनमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। इस मंदिर के आविर्भाव के विषय में अनेक मान्यताएं हैं। उनमें से एक जनश्रुति वनवासियों से जुड़ी हुई है। दम्मक्का नाम की एक राम भक्त महिला भद्रिरेड्डीपालम ग्राम में रहा करती थी। उस महिला ने राम नाम के एक लड़के को गोद लेकर उसका पालन-पोषण किया। एक दिन राम वन में गया और वापिस नहीं लौटा। दम्मक्का उसे खोजते-खोजते जंगल में पहुंच गई और राम-राम पुकारते हुए भटकने लगी। तभी उसे एक गुफा के अन्दर से आवाज आई--'मां! मैं यहां हूं।' वहां जाने पर उस महिला को राम, लक्ष्मण और सीता की प्रतिमाएं प्राप्त हुईं। उन्हें देखकर दम्मक्का भक्तिविभोर हो गई। कुछ ही देर में उसने अपने पुत्र को भी अपने सम्मुख खड़ा पाया। दम्मक्का ने उस स्थान पर बांस की छत बनाकर मंदिर की स्थापना की। धीरे-धीरे स्थानीय वनवासी समुदाय 'भद्रगिरि' या 'भद्राचलम' नामक उस पहाड़ी पर श्रीराम की पूजा करने लगे।

दूसरी मान्यता भद्राचलम शहर से जुड़ी है। भद्र नामक ऋषि श्रीराम के निष्ठावान भक्त थे। सीता को बचाने के लिए जाते समय श्रीराम की मुलाकात बाबा भद्र से हुई। ऋषि ने उनसे अपने सिर पर विराजमान होने की प्रार्थना की। देवी सीता को पुनः लाने की शीघ्रता में श्रीराम ने उन्हें लौटते समय उनकी इच्छा पूरी करने का आश्वासन दिया, किन्तु लौटते समय वैसा नहीं हो सका। भद्रा ऋषि ने श्री विष्णु के राम अवतार की एक

झलक पाने के लिए श्री विष्णु की साधना जारी रखी। साधना के मध्य उन्हें अनेक देवकृत उपद्रवों का भी सामना करना पड़ा, किन्तु वे अचल रहे। ऐसा माना जाता है कि उनकी भक्ति और तपस्या से प्रभावित होकर श्रीराम, लक्ष्मण और सीता उन्हें दिखाई दिए तथा अपने आने की घोषणा उन्होंने शंख बजाकर की। इस प्रकार इस शहर का नाम ऋषि भद्र की अचल साधना के कारण भद्राचलम हो गया।

अर्वाचीन इतिहास के अनुसार गोलकुण्डा का कुतुबशाही नवाब अबुल हसन तानाशाह (सन् १६७२-१६८७) था। उसकी ओर से भद्राचलम के तहसीलदार के रूप में नियुक्त कंचली गोपन्ना ने कर वसूली से प्राप्त धन से बांस से बने हुए उस श्री सीतारामचन्द्रन मंदिर के स्थान पर एक विशाल परकोटे के भीतर भव्य मंदिर बनवाया। उन्होंने राम की भक्ति में कई भजन भी लिखे, इसी कारण लोग उन्हें रामदास कहने लगे। रामदास विदेशी अक्रमण के खिलाफ देश में 'भक्ति आंदोलन' से जुड़े हुए थे। कबीर रामदास के आध्यात्मिक गुरु थे और उन्होंने रामदास को 'रामानंदी संप्रदाय' की दीक्षा दी थी। रामदास के कीर्तन घर-घर में गाए जाते थे। वे तानाशाही राज के विरोध में खड़े होने की प्ररेणा देते थे। आज भी हरिदास नामक घुमन्तु प्रजाति भक्त रामदास के कीर्तन गाते हुए राम भक्ति का प्रचार करती दिखाई देती है। रामदास द्वारा कर वसूली से प्राप्त धन से भव्य मंदिर के निर्माण की जानकारी जब तानाशाह को मिली तो वह बहुत रुष्ट हुआ और उसने रामदास को गोलकुंडा किले में कैद कर दिया। आज भी हैदराबाद में स्थित गोलकुंडा किले में वह कालकोठरी देखने को मिलती है, जहां रामदास को बन्दी बनाकर रखा गया था। जनश्रुति के अनुसार बाद में किसी दैविक चमत्कार के आधार पर तानाशाह ने रामदास को बंधनमुक्त कर दिया था। मंदिर निर्माण और उसके आविर्भाव की मान्यता जो भी हो, किन्तु इतना अवश्य है कि जनता में इस मंदिर के प्रति विशेष आकर्षण देखा जाता है। रामनवमी और दशहरा के अवसर पर भद्राचलम में हजारों लोगों की भीड़ उमड़ती है।

आज विहार पथ के आसपास सीआरपीएफ (सेंट्रल रिजर्व पुलिस फॉर्स) की गतिविधियां दिखाई देने लग गईं। मार्ग के समीप एक बख्तरबंद गाड़ी के आसपास खड़े सशस्त्र जवान नक्सल प्रभावित क्षेत्र के प्रारंभ को दर्शा रहे थे। निर्धारित यात्रा पथ के अनुसार पूज्यप्रवर का इस भयावह क्षेत्र में कई दिनों का प्रवास है, किन्तु आचार्यप्रवर के कुशल नेतृत्व और तपोमय आभामंडल की छत्रछाया में चारित्रात्माओं और श्रद्धालुजनों में अभय का भाव मुखर रूप में जानने को मिल रहा है।

प्रवास स्थल में पधारने के उपरान्त साध्वीवृन्द ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पाक्षिक खमतखामणा किए। आचार्यप्रवर ने भी उनसे खमतखामणा कर उन्हें गत कल मुनिवृन्द को प्रदान किए गए पाक्षिक संबोध की तर्ज पर प्रेरणा प्रदान करते हुए वाणी को शिष्ट, मिष्ट और विशिष्ट बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश अनेक पुरानी साध्वियों का उल्लेख किया, जिनसे प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में जनता को गुस्से से दूर रहने हेतु उत्प्रेरित किया।

आज दोहपर में भद्राचलम के प्रसिद्ध श्री सीतारामचन्द्रन मंदिर के प्रधान पुजारी श्री रामानुजदासम आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर का उनसे कुछ समय तक वार्तालाप का क्रम रहा।

तेलंगाना की प्रभावक यात्रा परिसम्पन्न कर आंध्रप्रदेश में मंगल प्रवेश

३१ दिसम्बर। सन् २०२० का आखिरी दिन। आज भी सूर्योदय के आसपास वातावरण में कोहरा छाया हुआ था, इस कारण विहार कुछ विलम्ब से हुआ। करीब ७.३५ बजे वातावरण कोहरामुक्त हुआ तो परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने भद्राचलम से नालाकुण्ठा की ओर प्रस्थान किया। सरस्वती शिशु मंदिर हाइ स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती गीता ने गत कल का प्रवास अपने विद्यालय में करने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। आचार्यप्रवर ने मंगलकामना करते हुए कहा--'अच्छा विकास हो।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज विहार के प्रारंभ में करीब आधा कि.मी. की दूरी तय करने के उपरान्त तेलंगाना से आंध्रप्रदेश की सीमा में प्रवेश किया। पूज्यप्रवर ने गत १४ जून को तेलंगाना में प्रवेश किया था, तब से निरन्तर प्रवास तेलंगाना में ही हो रहा था। इस प्रकार दक्षिण भारत के छठे राज्य (यात्रा क्रम के अनुसार) में पूज्यप्रवर का करीब साढे छह माह का प्रवास रहा। आंध्रप्रदेश एक ऐसा राज्य है, सन् २०१८ में जहां प्रवेश के साथ पूज्यप्रवर का दक्षिण भारत में प्रवेश हुआ था। सन् २०१९ में भी पूज्यप्रवर का इस राज्य में पदार्पण हुआ और आज सन् २०२० के अंतिम दिन भी इस राज्य में पूज्यप्रवर का प्रवेश हुआ। नववर्ष २०२१ का प्रारंभ भी इस राज्य की सीमा में ही होना है। इस प्रकार आंध्रप्रदेश को सन् की दृष्टि से निरन्तर चार वर्षों तक पूज्यप्रवर के पदार्पण और प्रवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ, हो रहा है, होने वाला है।

आचार्यप्रवर आंध्रप्रदेश के इस्ट गोदावरी जिले में प्रविष्ट हुए। आंध्रप्रदेश का श्रद्धालु क्षेत्र राजमुन्द्री भी इसी जिले में स्थित है और काकीनाड़ा तो इस जिले का मुख्यालय है। आंध्रप्रदेश के श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य का अपने प्रान्त की धरती पर श्रद्धासिक्त स्वागत किया।

आंध्रप्रदेश में प्रवेश के बाद मार्ग के आसपास हरियाली की सघनता दिखाई देने लगी। कतारबद्ध लगाए गए नीलगिरि के हजारों वृक्ष कई किलोमीटर तक अहिंसा यात्रा के मानों साक्षी बने। मार्ग के आसपास खेतों में कुछ अलग अंदाज में खेती होती दिखाई दी। खेतों में लगे पौधों की जमीन को प्लास्टिक से ढकी हुई थी, ताकि प्लास्टिक में नमी रहने से कम पानी से भी अच्छी खेती हो सके। नेलीपाका के लोगों ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। छुडावरम के ग्रामीणों को भी विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष पाने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर निरन्तर गंतव्य की ओर गतिमान थे। मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन करने वाले लोग अपने-अपने घरों आदि में पहुंच कर स्वजनों, मित्रों आदि को आचार्यप्रवर के विषय में बता रहे थे तो कई लोग अपने-अपने दुपहिया वाहनों पर बैठकर आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंच रहे थे और सविनय वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे।

मार्ग के समीप गिरजाघर के फादर श्री एंथोनी ने गिरजाघर के समीप पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। आचार्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थामे तो वे बोले--'आज आपका प्रवास हमारे चर्च में होना था, किन्तु हमारे पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कारण यह सौभाग्य हमें नहीं मिला।' आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

आदिवासी अचंल में अहिंसा यात्रा

यों तो गत कुछ दिनों से पूज्यप्रवर का विहरण जंगल और आदिवासी अंचल में हो रहा है, किन्तु आज से उसका सघन रूप दिखाई देने लगा। आबादी की सघनता कुछ कम होने के साथ-साथ विहार पथ पर यातायात भी कम हो गया, जो कि जंगल में होने के अहसास को और अधिक पुष्ट बना रहा था। मार्ग के समीप बनी झोंपड़ियां आदिवासियों, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'गिरिजन' कहा जाता है, का निवास स्थल बनी हुई थीं। कहीं-कहीं अब पक्के मकान भी बनने शुरु हो गए हैं, किन्तु बहुलता झोंपड़ियों की ही देखी जा सकती है। सरकार इन लोगों के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध करा रही है। लोगों ने बताया कि ये आदिवासी कोइया जाति के हैं, इस जाति के लोग इस क्षेत्र में काफी दूर तक बसे हुए हैं। आदिवासी लोग अपने क्षेत्र में समागत अहिंसा यात्रा को आश्चर्य से निहार रहे थे और कई लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद से भी लाभान्वित बने। स्थानीय प्रधान श्री बाबूराव ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर करीब १४.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर नालाकुण्ठा स्थित आश्रम हाइ सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज दोपहर तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय प्रधानाध्यापिका श्रीमती ललिता आदि शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में राग-द्वेष रूपी पाश से मुक्ति की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने सन् २०२० के समापन के संदर्भ में कहा--'आज ३१ दिसम्बर है। सन् २०२० का अंतिम दिन है। सन् २०२० के कुछ ही घंटे अवशेष रहे हैं। वर्ष जा रहे हैं, जीवन धीरे-धीरे आगे बढ रहा है। समय के चक्र को कोई रोक नहीं सकता।'

आचार्यप्रवर ने आंध्रप्रदेश में आगमन के प्रसंग में कहा--'हम दक्षिण भारत की यात्रा कर रहे हैं। आज सवेरे तक तेलंगाना में थे और उसके बाद वहां से विहार कर आंध्रप्रदेश में आ गए हैं। आंध्रप्रदेश का पता नहीं क्या योग है कि हम सन् २०१८ में भी आंध्रप्रदेश में थे, सन् २०१९ में आंध्रप्रेदश में गए थे, सन् २०२० में आज फिर आंध्रप्रदेश में आ गए हैं। सन् २०२१ के प्रारंभ में भी आंध्रप्रदेश में रहना है। दक्षिण भारत की यात्रा में दक्षिण के प्रांतों में संभवतः आंध्रप्रदेश ही ऐसा है, जहां हर वर्ष आना हो रहा है।

आज फिर तेलंगाना से आंध्रप्रदेश में आना हो गया है। तेलंगाना में हमारा कई महीनों तक लगातार रहना हुआ। एक बार तेलंगाना का स्पर्श कर लिया, फिर बीच में छूटा नहीं। आज तेलंगाना से विदाई हो गई है। इस प्रकार क्षेत्र का परिवर्तन भी हो सकता है, काल का परिवर्तन भी हो सकता है और भाव का परिवर्तन भी हो सकता है। हम ऐसा परिवर्तन लाएं कि राग-द्वेष रूपी जो पाश हैं, उनसे मुक्त होने की स्थिति आ जाए।'

पूज्यप्रवर ने प्रवचन के दौरान भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा तथा गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का सश्रद्धा स्मरण किया।

आज के रात्रिकालीन प्रवास स्थल की कुछ अधिक दूरी को देखते हुए आज के सायंकालीन विहार के प्रारंभ का समय करीब ३.३० बजे निर्धारित किया गया। उसे देखते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर का सायंकालीन आहार करीब २.५० बजे के आसपास प्रारंभ हो गया। इन दिनों सायंकालीन विहार होता है तो सायंकालीन आहार और आगामी दिन के प्रातराश में करीब उन्नीस घंटों का अथवा उससे भी ज्यादा समय का अन्तराल हो जाता है, क्योंकि पूज्यप्रवर प्रातःकालीन विहार सम्पन्न होने से पूर्व पानी के सिवाय प्रायः कुछ भी ग्रहण नहीं करते।

पूर्व निर्धारणानुसार करीब ३.३० बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर ने नालाकुण्ठा से लक्ष्मीपुरम की ओर प्रस्थान किया। आंध्रप्रदेश इस्ट गोदावरी ट्राइबल वैलफेयर डिपार्टमेन्ट की डिप्टी डायरेक्टर श्रीमती सरस्वती ने विहार से पूर्व पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद और पावन पथदर्शन प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में भी संक्षिप्त अवगति प्रदान की।

विहार के दौरान मार्ग पर चींटियों और अन्य जीवों को बहुलता पूज्य चरणों की गति को मंद बनाने वाली सिद्ध हुई। 'जीव हैं' 'चींटियां हैं' आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से कुछ उच्च स्वर में निकलने वाले ये शब्द अन्य लोगों को भी उन निरीह प्राणियों की अहिंसा के प्रति सचेत कर रहे थे।

मार्ग के आसपास वृक्षों की बहुलता और जनजीवन की अल्पता पूज्यप्रवर की वन्य क्षेत्र की यात्रा को दर्शा रही थीं। इस पथ पर यातायात की न्यूनता इस क्षेत्र को कुछ सुनसान-सा बनाए हुए है। बासवालु गांव के ग्रामीणों ने करबद्ध और नतसिर होकर आचार्यप्रवर को सविनय वंदन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। लिंगारपल्ली गांव की एक महिला आचार्यप्रवर के दर्शन हेतु वाहन लेकर पीछे से आई और उसने भावविभोर होकर पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर का पावन आशीर्वाद पाकर वह आह्लादित थी।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर करीब ७ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर लक्ष्मीपुरम में पधारे। स्थानीय लोगों ने आचार्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। जैन धर्म से अपरिचित होने के बावजूद स्थानीय जनता में संतों

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2021-23 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

के प्रति सहज भक्ति का भाव दिखाई दे रहा था। जिला परिषद स्कूल में पूज्यप्रवर का आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

विद्यालय परिसर कुछ खण्डहर-सा प्रतीत हो रहा था, किन्तु आचार्यप्रवर और उनकी मंगल छत्रछाया में वहां प्रवास करने वाले संतों के सहज आनन्द की अनुभूति अक्षुण्ण थी।

नववर्ष पर पूज्यप्रवर के दर्शन करने और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का श्रद्धालुजनों के देश के विभिन्न क्षेत्रों से पूज्यसन्निधि में पहुंचने का सिलसिला आज प्रायः दिन भर चलता रहा। कुछ श्रद्धालु रात्रि में भद्राचलम पहुंच गए, ताकि वे नववर्ष के प्रातःकाल अपने आराध्य के मंगल दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। इस खतरनाक और भयावह क्षेत्र में इतने श्रद्धालुओं का पूज्यसन्निधि में पहुंचना आचार्यप्रवर के प्रति उनके प्रबल श्रद्धाभाव को दर्शा रहा था।

पाक्षिक संबोध

१४ दिसम्बर। आज रात्रिकालीन अर्हत्वन्दना के उपरान्त तथा पाक्षिक खमतखामणा से पूर्व पूज्यप्रवर ने संतों को पाक्षिक संबोध प्रदान करने के क्रम में गत कल चली चर्चा को आगे बढाया। गत कल पूज्यप्रवर ने कुछ संतों से 'अ भु खे थ उ थी' का तात्पर्य पूछा था। संतो के द्वारा उत्तर देने का प्रयास किया गया। आचार्यप्रवर ने इसे व्याख्यायित करते हुए कहा--'अ अर्थात असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर प्रथम नरक से आगे की नरक में नहीं जा सकते। इसी प्रकार भु अर्थात भुजपरिसर्प संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय दूसरे, खे अर्थात खेचर संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय तीसरे, थ अर्थात थलचर संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय चौथे, उ अर्थात उरपरिसर्प संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पांचवें, थी अर्थात स्त्री (मनुष्य स्त्री और जलचर तिर्यंच स्त्री) छठे नरक से आगे के नरक में नहीं जा सकते। आचार्यप्रवर ने आज 'अ भु खे थ उ थी' के साथ दो अक्षर और जोड़ते हुए कहा--'इसमें 'ज म' और जोड़ दिया जाए तो अधिक स्पष्टता हो सकती है। 'ज' अर्थात् जलचर (पुरुष व नपुसंक) और 'म' अर्थात मनुष्य (पुरुष व नपुसंक) सातवें नरक तक जा सकते हैं।'

पूज्यप्रवर द्वारा जोड़े गए दोनों अक्षरों के साथ पूरे सूत्र को दोहराकर मुनिवृन्द ने उसे कंठस्थ कर लिया-'अ भु खे थ उ थी ज म।'

श्री के.सी.जैन अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी निर्वाचित

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की १० दिसम्बर को आयोजित बैठक में श्री के.सी.जैन (दिल्ली) को न्यास के प्रबन्ध न्यासी के रूप में निर्वाचित किया गया। नवनिर्वाचित प्रबन्ध न्यासी ने कुछ दिनों बाद पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। २५ दिसम्बर को आयोजित बैठक में न्यास के नवमनोनीत ट्रस्टी इस प्रकार हैं- श्री अरविन्द संचेती-अहमदाबाद, श्री बजरंग बोथरा-नोएडा, श्री दिलीप बैद-जयपुर, श्री हिमांशु बैद-दिल्ली, श्री हिमांशु जैन(आई.ए.एस.)-पंजाब, श्री महेन्द्र नाहटा-दिल्ली, श्री पुष्प जैन पटावरी-दिल्ली, श्री सुरेन्द्र चोरड़िया-कोलकाता, श्री सुनील जसवंतराय जैन-दिल्ली, श्री संजय धारीवाल-बेंगलुरु, श्री सुशील राखेचा-दिल्ली, श्री सुशील बोथरा-दिल्ली , श्री शांति कुमार जैन-दिल्ली।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला